



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 09 (सितम्बर, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

बेहतर आहार, बेहतर झुंड: शुष्क क्षेत्रों में भेड़ पालन की उत्पादकता बढ़ाने के व्यावहारिक उपाय

*विकास कुमार मीना, मनोज कुमार, अभिषेक छेत्री एवं सौरव बर्मन

पशुधन उत्पादन प्रबंधन प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: vikasggc20@gmail.com

शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में भेड़ पालन कम वर्षा और सीमित चारे के बीच ग्रामीण परिवारों की आय का भरोसेमंद साधन है। यहाँ भेड़ों का आहार मुख्यतः चराई, खेजड़ी-बेर जैसी वृक्ष-पत्तियों और फसल अवशेषों पर टिका है। पर सूखे महीनों में चारे की कमी से वजन, प्रजनन और मेमनों की उत्तरजीविता घट जाती है। यह लेख बताता है कि पशुपालक अपने उपलब्ध संसाधनों को थोड़े बेहतर ढंग से जोड़कर, यानी मौसम के अनुसार चारा-योजना, नाजुक अवस्थाओं में पूरक आहार, खनिज मिश्रण और चारा संरक्षण से, झुंड की उत्पादकता कैसे बढ़ा सकते हैं।

मुख्य शब्द: भेड़ आहार प्रबंधन, शुष्क क्षेत्र, चराई, पूरक आहार, मेमना पोषण, चारा संरक्षण

प्रस्तावना

भेड़ को ग्रामीण भारत में "चलता-फिरता बैंक" कहा जाता है, क्योंकि जरूरत पड़ने पर एक-दो पशु बेचकर परिवार नकदी जुटा लेता है। पश्चिमी राजस्थान जैसे इलाकों में, जहाँ खेती वर्षा पर निर्भर और अनिश्चित है, भेड़ें कम गुणवत्ता वाले चारे को भी मांस, ऊन और खाद में बदल देती हैं। फिर भी एक बात अक्सर अनदेखी रह जाती है: नस्ल कितनी भी अच्छी हो, उसकी क्षमता तभी दिखती है जब आहार सही हो। कमजोर पोषण पर पत्नी अच्छी नस्ल की भेड़ भी धीमी बढ़ती है, देर से गाभिन होती है और उसके मेमने कमजोर होते हैं। इसलिए झुंड सुधारने की शुरुआत अक्सर आहार से होती है, महंगी नस्ल खरीदने से नहीं।

शुष्क क्षेत्र की आहार-चुनौती

- **चारागाहों पर दबाव:** गोचर भूमि घट रही है और पशु संख्या बढ़ रही है, जिससे अति-चराई होती है।
- **मौसमी उतार-चढ़ाव:** मानसून के बाद कुछ महीने हरा चारा भरपूर रहता है, फिर अप्रैल से जून तक भारी कमी हो जाती है।
- **गुणवत्ता की समस्या:** सूखी घास और भूसे में प्रोटीन कम और रेशा ज्यादा होता है, इसलिए पेट भरने पर भी पोषण पूरा नहीं होता।
- **ज्ञान का अंतर:** कई पशुपालक जानते हैं कि पूरक आहार लाभकारी है, पर कब, कितना और किसे देना है, यह स्पष्ट नहीं होता।

स्थानीय चारा संसाधन: जो पहले से उपलब्ध है

राजस्थान के पशुपालकों के पास कई परंपरागत संसाधन हैं जिन्हें बेहतर ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता है।

- **खेजड़ी की पत्तियाँ (लूंग) और फलियाँ (सांगरी):** सूखे मौसम में प्रोटीन और ऊर्जा का अच्छा स्रोत
- **बेर की पत्तियाँ (पाला):** पौष्टिक हरा-सूखा चारा
- **सेवण, धामन जैसी देशी घासें:** शुष्क चरागाहों की मुख्य घासें
- **मूँग-मोठ का भूसा:** प्रोटीन में गेहूँ-धान के भूसे से बेहतर
- **बाजरा कड़बी:** फसल कटाई के बाद उपलब्ध, ऊर्जा का स्रोत

दलहनी फसलों का भूसा और पेड़ों की पत्तियाँ प्रोटीन की कमी की भरपाई करती हैं। इन्हें सूखे भूसे के साथ मिलाकर देने से पाचन और सेवन दोनों सुधरते हैं।

जीवन-अवस्था के अनुसार आहार योजना

पूरे झुंड को एक जैसा खिलाने के बजाय, जिन अवस्थाओं में पोषण की माँग सबसे अधिक होती है, वहाँ ध्यान देना ज्यादा फ़ायदेमंद है।

1. प्रजनन से पहले (फ़लशिंग)

मेढ़े से मिलाने से लगभग 2–3 सप्ताह पहले भेड़ों को अच्छी चराई और थोड़ा दाना देने से ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। इससे ऋतुचक्र नियमित होता है और जुड़वाँ मेमने होने की संभावना बेहतर होती है।

2. गर्भावस्था का अंतिम चरण

गर्भ का अधिकांश विकास अंतिम 6 सप्ताह में होता है। इस दौरान पर्याप्त आहार न मिलने पर मेमने कम वज़न के जन्मते हैं और माँ का दूध भी घटता है। सामान्यतः 200–300 ग्राम प्रतिदिन दाना मिश्रण (मक्का/जौ का दलिया, चोकर, खली, खनिज मिश्रण) उपयोगी माना जाता है। मात्रा भेड़ के आकार, नस्ल और चराई की स्थिति के अनुसार बदलनी चाहिए।

3. दुग्ध काल

जिन भेड़ों के साथ मेमने हैं, उनकी पोषण माँग गर्भावस्था से भी अधिक हो सकती है। हरा चारा और दाना जारी रखें और पीने के साफ़ पानी की कमी न होने दें।

4. नवजात और बढ़ते मेमने

- जन्म के पहले कुछ घंटों में खीस (कोलोस्ट्रम) अवश्य पिलाएँ। यह रोगों से बचाव के लिए प्रतिरक्षा प्रदान करती है।
- कमज़ोर या अनाथ मेमनों को बोतल से दूध पिलाना एक व्यावहारिक उपाय है, पर बर्तन और निप्पल की सफ़ाई ज़रूरी है ताकि दस्त न लगें।
- 2–3 सप्ताह की उम्र से मुलायम हरा चारा और स्टार्टर दाना (क्रीप फीड) देना शुरू करें, इससे दूध छुड़ाने के बाद वज़न में गिरावट कम होती है।

खनिज और नमक: छोटी मात्रा, बड़ा असर

कैल्शियम, फॉस्फोरस, ताँबा और जिंक जैसे खनिज हड्डियों, प्रजनन और रोग-प्रतिरोधकता के लिए ज़रूरी हैं। शुष्क क्षेत्र की मिट्टी और चारे में इनकी कमी आम है। पशु चिकित्सक या पशुपालन विभाग द्वारा अनुशंसित खनिज मिश्रण दाने में मिलाकर या मिनरल ब्लॉक के रूप में नियमित दें, और नमक हर समय उपलब्ध रखें।

सूखे महीनों के लिए चारा संरक्षण

अच्छे मानसून में मिलने वाला अतिरिक्त हरा चारा बर्बाद न होने दें।

- हे (सूखी घास):** घास को फूल आने के समय काटकर छाया या धूप में सुखाकर सुरक्षित रखें।
- साइलेज:** नमी वाला चारा गड्ढे या थैलों में दबाकर रखने से महीनों तक पौष्टिक बना रहता है।
- वृक्ष-पत्ती भंडारण:** खेजड़ी और बेर की पत्तियाँ सुखाकर रखने से मई-जून के संकट में काम आती हैं।
- भूसे का उपचार:** भूसे को काटकर या दाना और गुड़ के घोल के साथ मिलाकर देने से सेवन बढ़ता है।

परंपरागत ज्ञान और विज्ञान का मेल

चरवाहे चरागाहों के मार्ग, मौसम के अनुसार उपयोगी झाड़ियों और पशु के व्यवहार की गहरी समझ रखते हैं। विज्ञान इस अनुभव का विकल्प नहीं, बल्कि पूरक है। जब पशुपालक की जानकारी में संतुलित आहार का सिद्धांत जुड़ता है, तो बिना बड़े खर्च के परिणाम बेहतर होते हैं। प्रशिक्षण शिविर, प्रदर्शन इकाइयाँ और कृषि विज्ञान केंद्र इसमें अहम भूमिका निभा सकते हैं।

निष्कर्ष

किसान पोषक तत्व नहीं, घास, भूसा, पत्तियाँ और दाना खिलाते हैं। विज्ञान का काम इन्हीं सामग्रियों को सही समय पर, सही अनुपात में जोड़ना है। शुष्क क्षेत्रों में मौसम के अनुसार चारा-योजना, नाज़ुक अवस्थाओं में पूरक आहार, खनिज मिश्रण और चारा संरक्षण अपनाकर छोटे पशुपालक भी अपने झुंड का स्वास्थ्य, वृद्धि और आय बढ़ा सकते हैं।